Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 4, June-2018, ISSN 2230-7540

भारत-चीन संघर्ष और अमेरिका संबंध

Sonu*

Research Scholar, Political Science, OPJS University, Churu, Rajasthan

----------X----------

जब भारत चीन युद्ध शुरू हुआ तो देश के कई भागों में इस बात की मांग होने लगी कि असलंग्नता की नीति पूर्णतयः असफल हो चुकी है और देश के हित में इसका जल्द से जल्द परित्याग किया जाना चाहिए। परन्तु 20 अक्टूबर, 1962 को रेड़ियो से राष्ट्र के नाम सन्देश देते हुये पं. नेहरू ने स्पष्ट कर दिया कि भारत अपनी असलंग्नता की नीति का अनुशरण करता रहेगा। इसके बाद चीन तथा भारत का युद्ध जारी रहा तथा नेफा में भारतीय सेना की पराजय हुई। युद्ध की स्थिति अत्यन्त गंभीर हो गयी और भारत की सुरक्षा अत्यंत खतरे में पड़ गयी। इस हालात में भारत सरकार ने पश्चिमी राष्ट्रों से सैनिक सहायता के लिए अपील की। अमेरिका और ब्रिटेनने भारत को सहायता देने का निर्णय किया और इन देशों से बड़ी मात्रा में शस्त्रास्त्र भारत पहुंचाए गये। नेहरू मानते थे कि असंलग्नता की नीति को छोड़कर अमेरिकी गुट में शामिल हो जाने के फलस्वरूप भारत-चीन सीमा संघर्ष शीत युद्ध का एक अंग बन जाता। नेहरू ने व्यवहारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुये निर्णय लिया कि भारत अपनी रक्षा के लिए सभी मित्र राष्ट्रों से सहायता लेगा। लेकिन असंलग्नता की नीति का परित्याग नहीं करेगा।

स्वतंत्रता के बाद भारत और चीन संबंधों की कहानी भारतीय नेताओं की आदर्शवादिता, स्वप्नदर्शिता और अदूरदर्शिता तथा चीनी विश्वासघात की कहानी है। भारत की चीन संबंधी नीति निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित रही। प्रथम यह विश्वास था कि प्राचीन काल से ही भारत और चीन के मध्य घनिष्ट सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संबंध विद्यमान थे। बौद्ध धर्म की जन्म भूमि भारत, चीन का एक प्रकार से धर्मगुरू है और चीन उसका सम्मान करेगा। दूसरे चीन को अपनी स्वतंत्रता और अखण्डता की रक्षा के लिए पाश्चात्य और जापानी साम्राज्यवाद के विरूद्ध एक भीषण और दीर्घ कालीन संघर्ष करना पड़ा था। इससे भारत में उसके प्रति गहरी सहानुभूति उत्पन्न हो गयी थी। तीसरे यह माना जाता था कि चीन ने भारत पर कभी आक्रमण नहीं किया है और न ही करेगा और वह कभी आक्रमण करना भी चाहेगा तो उत्तर के दुर्गम हिमालय पर्वत उसे कभी ऐसा नहीं करने देगा। चैथे भारतीय विदेश नीति के प्रधान पं. नेहरू और उनके विश्वस्त परामर्श दाता रक्षा मंत्री कृष्ण मैनन चीन, विशेशतया साम्यवादी चीन के प्रति गहरी सहानुभूति रखते थे औ चीन के साथ मैत्री को असंलग्नता की नीति की आधार शिला मानते थे।

1 जनवरी, 1979 को अमेरिका ने चीन को मान्यता देने की घोषणा की जिसमें एक चीन के स्वरूप को मानते हुये मान्यता दी गई थी। इसमें यह स्वीकार किया गया था कि ताईवान चीन का ही भाग है। इस वर्ष 1979 में चीन के उप प्रधानमंत्री तेंग सियाओं पिंग ने अमेरिका की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान चीन अमेरिका मे वैज्ञानिक सहयोग सांस्कृतिक समझौते करते हुये संबंध स्थापित किये गये। इसके बाद अमेरिका ने चीन को सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र का दर्जा देने का अनुमोदन भी किया था।

दिसम्बर 1979 में जब रूसी सेनाऐं अफगानिस्तान में उपस्थित हुई तो इसका प्रभाव चीन-अमेरिका संबंधों पर भी पड़ा था। दोनों ही इससे काफी नजदीक आये। इसी के साथ ईरान-ईराक युद्ध 1980 शुरू हो जाने से चीन की विदेश नीति को काफी अति पहुंची थी। इस घटना से प्रभावित होकर चीन और अमेरिका ने रूसी साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिये वर्ष 1981 में पीकिंग में समझौता किया गया। जिसमें दोनों की सुरक्षा करने वैसे चीन अमेरिका के बीच संबंधों की शुरूआत हुई थी। जिसमें पाँच मुख्य बातें इस प्रकार थी -

1. चीन अमेरिका के बीच व्यापार को बढ़ाना।
2. चीन अमेरिका के बीच यात्रियों का आदान-प्रदान
3. चीन को अमेरिकी डॉलर की सुविधा उपलब्ध करना।

www.ignited.in

4. एक-दूसरे का सहयोग करना।

अमेरिका राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन 20 जनवरी, 1980 को अमेरिका के राष्ट्रपति बने इन्होंने द्वितीय शीतयुद्ध के दौरान "स्टार वार" का कार्यक्रम साथ लाकर रूस के साथ तनाव में वृद्धि की गई थी। इस कारण भी चीन अमेरिका संबंधों में निकटता आयी थी। अमेरिका ने एन.पी.टी. व सी.टी.बी.टी. सन्धि को लागू करने की नीति अपनायी। इसमें चीन ने भी सहयोग दिया। मई 1995 में एन.पी.टी सन्धि की अवधि अनिश्चित कालीन अवधि के लिए बढ़ा दिये जाने के बाद जनू 1996 में चीन ने एन.पी.टी. व सी.टी.बी.टी. सन्धि की पुष्टि करके आणविक परीक्षणों पर एक तरफा स्वेच्छा से प्रतिबन्ध लगा दिया इस परिधि में भारत को भी लाया गया।

अमेरिका के राष्ट्रपति बिलक्लिंटन की चीन यात्रा 25 जून, 1998 से नौ दिवसीय सम्पन्न की गई। यह यात्रा चीन अमेरिका गठबन्धन करने के उद्देश्य से भी की गयी थी। अमेरिका ने भारत से निम्न अपेक्षाऐं चाहता है। भारत-पाक परमाणु कार्यक्रम बन्द कर दें। भारत व पाक एन.पी.टी. व सी.टी.बी.टी. पर बिना शर्त हस्ताक्षर करे। भारत-पाक के मामलों में चीन मध्यस्थता करें। इसी तरह चीन का मानना है कि दक्षिणीय एशिया में भारत ने संकट उपस्थित किया है।

क्लिंटन की चीन यात्रा के दौरान निम्न मुद्दे पर बातचीत हुई।

1. भारत-पाक की परमाणु परीक्षणों में उपस्थिति वाली स्थिति पर चर्चा।
2. कश्मीर समस्या पर चर्चा।
3. मानवाधिकार क्षेत्रीय सुरक्षा पर चर्चा।
4. परमाणु और प्रेक्षपास्त्र अप्रसार पर चर्चा।
5. ईरान-लिबीया को चीन द्वारा प्रक्षेपास्त्र सहायता न देने पर विचार।
6. विश्व व्यापार संगठन में चीन के शामि होने पर विचार।
7. निःशस्त्रीकरण।
8. दक्षिणी एशिया को मुद्रा संकट पर विचार।
9. दक्षिणी एशिया के मुद्रा संकट पर विचार।

इस यात्रा के दौरान संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गयी जो इस प्रकार है:

1. अमेरिका चीन ने मिलकर भारत पाक से कहा कि परमाणु परीक्षण के बाद परमाणु हथियारों की तैनातगी एक-दूसरे के खिलाफ न करने का समझौता कर लेते हैं तो उन्हें शस्त्रीकरण न करने, परमाणु हथियार और प्रक्षेपास्त्र तैनात न करने का द्रढ़ संकल्प करें।
2. दोनों नेताओं ने नई दिल्ली और इस्लामाबाद से कहा कि वे आगे परमाणु परीक्षण नही करें तुरन्त बिना शर्त व्यापक परमाणु परीक्षण सन्धि पर हस्ताक्षर करें।
3. भारत-पाक को परमाणु शक्ति का दर्जा देने से इंकार किया गया।
4. भारत-पाक को प्रक्षेपास्त्र उपकरण या ऐसी सामग्री जिससे परमाणु अस्त्र ले जा सके वे नहीं देने का निश्चय का किया गया।

चीनी अमेरिकी गठबन्धन:

1. चीन व अमेरिका ने मिलकर भारत-पाक को परमाणु परीक्षणों से रोकने के लिए दबाव डालने की रणनीति तैयार की।
2. क्लिंटन ने कहा कि दक्षिण एशिया में हथियारों की होड़ शुरू करने में भारत-पाक का हाथ है।
3. क्लिंटन का मानना है कि घातक हथियार अगर गलत लोगों के हाथों में चले गये तो मानव जाति के लिए खतरा उत्पन्न कर सकते हैं।
4. मानवाधिकारों को लागू करने के लिए दोनों देशों में वचन बद्धता थी।

इस तरह चीन अमेरिका गठबन्धन के बारे में क्लिंटन ने कहा कि जिस तरह से विश्व में परिवर्तन हो रहे हैं और नई पीढ़ी को जिस तरह चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। उससे यह पता चलता है कि इन देशों की भलाई एक साथ मिलकर काम करने में ही है न कि अलग-अलग रहने में इसी तरह अमेरिका ने चीन पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए जापान से भी सुरक्षा

www.ignited.in

सन्धि कर रखी है। इससे अमेरिका चीन के प्रति दोहरी नीति रखता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जे. पी. जैन- न्यूक्लियर इण्डिया, वोल्यूम-1, रेडिएटन्ट पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 132

2. जे. एन. दीक्षित, भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2001, पृ. 228

3. अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद और विश्व सुरक्षा में क्रिया एम. जैकिस का लेख, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद: संघर्ष का एक नया ढ़ंग, क्रोमहेलम, लन्दन, 1975, पृष्ठ 13

4. हान्स जे. मौर्ड़ोन्जाऊ, राष्ट्रों के मध्य राजनीति, पृष्ठ 219-92

Corresponding Author

Sonu*

Research Scholar, Political Science, OPJS University, Churu, Rajasthan

E-Mail – bhardwajsonu80@gmail.com